

पर्यावरण की स्थिरता, मानवीय स्वास्थ्य और ग्रामीण आजीविका के लिए जैविक खेती का महत्व

डॉ. गुमाना राम¹, डॉ. मूल चन्द डोगीवाल²

¹सहायक आचार्य (भूगोल), श्रीमती रुकमणि देवी रामदेव लढ़ा राजकीय महाविद्यालय, नावां सिटी।

²सहायक आचार्य -VSY (भूगोल), श्रीमती रुकमणि देवी रामदेव लढ़ा राजकीय महाविद्यालय, नावां सिटी।

परिचय

जैविक खेती को पारिस्थितिक कृषि या जैविक कृषि भी कहा जाता है। जैविक कृषि कृषि का एक ऐसा तरीका है जो स्थिरता, पर्यावरण संरक्षण और कीटनाशकों व उर्वरकों जैसे कृत्रिम उत्पादों से बचाव पर जोर देता है। इसके अलावा, जैविक किसान मृदा की उपजाऊ क्षमता बढ़ाने, कीटों और खरपतवार को नियंत्रित करने और जैव विविधता को बढ़ावा देने के लिए प्राकृतिक तरीकों और तकनीकों पर निर्भर करते हैं।

जैविक खेती के मुख्य सिद्धांतों में शामिल हैं—

1. स्थिरता
2. पारिस्थितिक संतुलन
3. जैव विविधता
4. मृदा की सेहत
5. कीटों और खरपतवार का प्राकृतिक प्रबंधन
6. पशु कल्याण
7. कृत्रिम उत्पादों से बचाव

प्रमाणन संस्थाएँ आमतौर पर जैविक कृषि के तरीकों को नियमित और प्रमाणित करती हैं ताकि तय मानकों का पालन सुनिश्चित हो सके। 'जैविक' नाम वाले उत्पादों को इन प्रमाणन संस्थाओं द्वारा तय खास मानदंडों को पूरा करना होता है, जो क्षेत्र और देश के हिसाब से अलग-अलग हो सकते हैं। जैविक कृषि को अक्सर पारंपरिक खेती के मुकाबले अधिक टिकाऊ और पर्यावरण के अनुकूल विकल्प के तौर पर देखा जाता है, हालांकि इसमें अपनी चुनौतियाँ और सीमाएँ भी हैं।

पर्यावरण की स्थिरता के लिए जैविक खेती का महत्व

पर्यावरण की स्थिरता के लिए जैविक खेती बहुत ज़रूरी है क्योंकि यह ऐसे तरीकों को बढ़ावा देती है जो मृदा की सेहत, जैव विविधता के संरक्षण और रसायनों के कम इस्तेमाल को प्राथमिकता देते हैं। कृत्रिम कीटनाशकों और उर्वरकों का इस्तेमाल न करके, जैविक खेती पारंपरिक खेती से होने वाले पर्यावरण प्रदूषण को कम करती है, पानी की गुणवत्ता को बचाती है और उन जीवों की रक्षा करती है जिन्हें नुकसान नहीं पहुँचाना है। इसके अलावा, जैविक खेती के तरीके जैसे फसल चक्र, बतवच त्वजंजपवदद्ध, फसलों को ढकना और खाद बनाना मृदा की उपजाऊ क्षमता, संरचना और कार्बन सोखने की क्षमता को बढ़ाते हैं, जिससे मृदा लंबे समय तक उपजाऊ बनी रहती है और जलवायु परिवर्तन को कम करने में मदद मिलती है। अलग-अलग तरह के फसल चक्र और प्राकृतिक आवासों को बचाकर जैव विविधता को बढ़ावा देने से पारिस्थितिकी तंत्र मजबूत होता है, कीटों और बीमारियों का खतरा कम

होता है, और प्राकृतिक रूप से कीटों पर नियंत्रण और परागण, च्वससपदंजपवदद्ध में मदद मिलती है। कुल मिलाकर, जैविक कृषि कृषि का एक ऐसा तरीका है जो प्राकृतिक पारिस्थितिकी के साथ तालमेल बिठाता है, पर्यावरण की देखभाल को बढ़ावा देता है, और कृषि वाली जमीन की लंबी अवधि की सेहत और मजबूती को बनाए रखता है।

1. मृदा की सेहत—जैविक खेती फसल चक्र, खाद बनाने और कम जुताई जैसे तरीकों से मृदा की सेहत को प्राथमिकता देती है। ये तरीके मृदा के स्वस्थ पारिस्थितिकी विकास को बढ़ावा देते हैं, जिससे मृदा की उपजाऊ क्षमता, संरचना और पानी सोखने की क्षमता बढ़ती है। स्वस्थ मृदा में कई प्रकार के सूक्ष्मजीव पनपते हैं, पोषक तत्वों का चक्र बेहतर होता है, और मृदा का कटाव कम होता है, जिससे मृदा लंबे समय तक उपजाऊ बनी रहती है।
2. जैव विविधता का संरक्षण—जैविक कृषि प्रणालियाँ अलग-अलग प्रकार के फसल चक्र, इंटरक्रॉपिंग (एक साथ कई फसलें उगाना) और खेतों के अंदर और आसपास प्राकृतिक आवासों को बचाकर जैव विविधता को बढ़ावा देती हैं। यह जैव विविधता कई तरह के पौधों और जानवरों की प्रजातियों को सहारा देती है, जिनमें परागण करने वाले जीव, फायदेमंद कीड़े और मृदा के जीव शामिल हैं। जैव विविधता वाला कृषि का क्षेत्र पारिस्थितिकी को मजबूत बनाता है, कीटों और बीमारियों के फैलने का खतरा कम करता है, और पर्यावरण की कुल सेहत में योगदान देता है।
3. पानी की गुणवत्ता और संरक्षण—जैविक कृषि के तरीके कृत्रिम उर्वरकों और कीटनाशकों के इस्तेमाल को कम करके पानी की गुणवत्ता को बचाने में मदद करते हैं, क्योंकि ये रसायन पानी के स्रोतों में मिलकर जलीय पारिस्थितिक को प्रदूषित कर सकते हैं। इसके अलावा, जैविक कृषि के तरीके जैसे कवर क्रॉपिंग और कृषि-वानिकी, हतववितमेजतलद्ध मृदा के कटाव और पानी के बहाव को कम करने में मदद कर सकते हैं, जिससे नदियों, झीलों और तटीय इलाकों में गाद और पोषक तत्वों का प्रदूषण कम होता है। कुशल सिंचाई और मृदा के प्रबंधन जैसे पानी बचाने के उपायों को बढ़ावा देकर, जैविक कृषि कृषि के अन्तर्गत पानी के टिकाऊ इस्तेमाल में योगदान देती है।
4. जलवायु परिवर्तन को कम करना—जैविक कृषि में मृदा में कार्बन को जमा करके और ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करके जलवायु परिवर्तन को कम करने की क्षमता है। कवर क्रॉपिंग, फसल विविधीकरण (अलग-अलग तरह की फसलें उगाना) और मृदा में जैविक वस्तुओं के मिलाने जैसे तरीकों से मृदा में जैविक पदार्थों की मात्रा बढ़ती है, जिससे कृषि वाली मृदा में कार्बन जमा करने की क्षमता बढ़ती है। इसके अलावा, जैविक कृषि में कृत्रिम खाद का इस्तेमाल नहीं किया जाता है, जो नाइट्रस ऑक्साइड उत्सर्जन का एक बड़ा स्रोत है और एक शक्तिशाली ग्रीनहाउस गैस है। मृदा की सेहत को बेहतर बनाने और जीवाश्म ईंधन पर आधारित वस्तुओं पर निर्भरता कम करने वाले कृषि पारिस्थितिक तरीकों को अपनाकर, जैविक कृषि जलवायु परिवर्तन को कम करने की कोशिशों में योगदान देती है।
5. रसायन का कम उपयोग—जैविक कृषि में कृत्रिम कीटनाशकों, खरपतवारनाशकों और उर्वरक का इस्तेमाल नहीं किया जाता है, जिनका इंसानी सेहत और पर्यावरण पर बुरा असर पड़ सकता है। रसायनों का इस्तेमाल कम करके, जैविक कृषि खाने और पानी में कीटनाशकों के अवशेषों का खतरा कम करती है, उन जीवों की रक्षा करती है जिन्हें नुकसान नहीं पहुँचाना है, और किसानों व खेत में काम करने वालों के लिए सुरक्षित काम का माहौल बनाती है। जैविक कृषि कृत्रिम कृषि रसायनिक के उत्पादन और इस्तेमाल से होने वाले पर्यावरण प्रदूषण को भी कम करती है, जिससे कुल मिलाकर पर्यावरण की स्थिरता में योगदान मिलता है।
6. पारिस्थितिकी तंत्र का संरक्षण—जैविक कृषि के तरीके पारिस्थितिक सिद्धांतों पर आधारित होते हैं, जिनसे परागण, कीट नियंत्रण और पोषक तत्वों के चक्र जैसी प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र को बेहतर बनाया जाता है। रहने की जगहों में विविधता लाकर और फायदेमंद कीड़ों व सूक्ष्मजीवों की आबादी को बढ़ावा देकर, जैविक

कृषि इन सभी पारिस्थितिकी तंत्र को बेहतर बनाती है। इससे बाहरी चीजों (जैसे रसायनों) की आवश्यकता कम होती है और कृषि का पारिस्थितिकी अधिक मज़बूत और स्वयं को संतुलित करने वाला बनता है।

कुल मिलाकर, जैविक कृषि मृदा की सेहत सुधारने, जैव-विविधता बचाने, पानी की गुणवत्ता की रक्षा करने, जलवायु परिवर्तन को कम करने, रसायन का इस्तेमाल घटाने और पारिस्थितिकी तंत्र को सुरक्षित रखने के जरिए पर्यावरण की स्थिरता को बढ़ावा देने में अहम भूमिका निभाती है। जैविक कृषि के तरीकों को अपनाकर, किसान कृषि के प्रणाली की लंबे समय की सेहत और मज़बूती में योगदान दे सकते हैं और साथ ही पर्यावरण पर पड़ने वाले बुरे असर को कम कर सकते हैं।

मानवीय स्वास्थ्य के लिए जैविक कृषि का महत्व

जैविक कृषि मानवीय स्वास्थ्य के लिए बहुत आवश्यक है क्योंकि यह हानिकारक रसायनों के संपर्क को कम करने और खाद्य पदार्थों की पोषण गुणवत्ता को बेहतर बनाने का रास्ता दिखाती है। कृत्रिम कीटनाशकों और उर्वरकों का इस्तेमाल न करके, जैविक कृषि फसलों में कीटनाशकों के अवशेषों के जोखिम को कम करती है, जिससे उपभोक्ता स्नायु-विज्ञान विषयक विकार, छमनतवसवहपबंस क्पेवतकमतद्ध और कैंसर जैसी संभावित स्वास्थ्य समस्याओं से सुरक्षित रहते हैं। इसके अलावा, जैविक उत्पादों में अक्सर एंटीऑक्सीडेंट और विटामिन जैसे फायदेमंद पोषक तत्वों की मात्रा अधिक होती है, जो कुल मिलाकर सेहत और भलाई में योगदान देते हैं। साथ ही, जैविक पशुपालन में एंटीबायोटिक्स और ग्रोथ हार्मोन के नियमित इस्तेमाल पर रोक होती है, जिससे यह पक्का होता है कि मीट और डेयरी उत्पाद एंटीबायोटिक अवशेषों से मुक्त हों और जानवरों व इंसानों की सेहत के लिए एंटीबायोटिक्स का जिम्मेदार इस्तेमाल हो। कुल मिलाकर, जैविक कृषि खाने के उत्पादन का एक ऐसा तरीका है जो इंसानी सेहत, पर्यावरण की स्थिरता और नैतिक बातों को प्राथमिकता देता है।

1. कीटनाशकों और केमिकल अवशेषों के संपर्क में कमी—जैविक कृषि में सिंथेटिक कीटनाशकों, खरपतवारनाशकों और फर्टिलाइज़र का इस्तेमाल नहीं किया जाता है, जो फसलों पर अवशेष छोड़ सकते हैं और मृदा, पानी और हवा को दूषित कर सकते हैं। ऑर्गेनिक उत्पादों का सेवन करके, लोग संभावित रूप से हानिकारक केमिकल अवशेषों के संपर्क को काफी कम कर सकते हैं, जिससे कीटनाशक से जुड़ी स्वास्थ्य समस्याओं जैसे स्नायु-विज्ञान विषयक विकार, कैंसर और प्रजनन संबंधी समस्याओं का जोखिम कम हो जाता है।
2. पोषण गुणवत्ता—शोध से पता चलता है कि पारंपरिक तरीके से उगाए गए फलों, सब्जियों और अनाजों की तुलना में जैविक फलों, सब्जियों और अनाजों में अक्सर कुछ पोषक तत्व, जैसे एंटीऑक्सीडेंट, विटामिन और मिनरल्स की मात्रा अधिक होती है। जैविक कृषि के तरीके, जैसे मृदा को बेहतर बनाने की तकनीक और रसायनों का कम इस्तेमाल, फसलों की पोषण गुणवत्ता को बढ़ा सकते हैं, जिससे उपभोक्ता को संभावित रूप से अधिक स्वास्थ्य लाभ मिल सकते हैं।
3. जीवाणुनाशक मुक्त पशु उत्पाद—जैविक पशुपालन में जीवाणुनाशक और हार्मोन वृद्धि पर रोक लगती है, और जानवरों को ऐसी स्थितियों में पाला जाता है जो उनकी भलाई को प्राथमिकता देती हैं। नतीजतन, जैविक मांस, डेयरी और अंडे के उत्पाद जीवाणुनाशक अवशेषों से मुक्त होते हैं और उनमें बेहतर पोषक प्रोफाइल हो सकता है। इसके अलावा, जैविक पशुपालन में जीवाणुनाशक—जीवाणु प्रतिरोध का जोखिम कम होने से मानवीय बीमारियों के इलाज के लिए जीवाणुनाशक की प्रभावशीलता बनी रहती है, जिससे सार्वजनिक स्वास्थ्य की रक्षा में मदद मिलती है।
4. खाद्य सुरक्षा—जैविक कृषि के मानकों में खाद्य सुरक्षा और क्वालिटी सुनिश्चित करने के लिए कड़े नियम और प्रमाणन प्रक्रियाएँ शामिल हैं। ऑर्गेनिक सर्टिफिकेशन के लिए मृदा और पानी के प्रबंधन, कीट और बीमारी नियंत्रण, और प्रोसेसिंग के तरीकों से जुड़े कड़े दिशानिर्देशों का पालन करना ज़रूरी है। इन मानकों का पालन

करके, ऑर्गेनिक किसान भोजन से होने वाली बीमारियों के जोखिम को कम करने में मदद करते हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि ऑर्गेनिक उत्पाद कड़े सुरक्षा मानदंडों को पूरा करें।

5. स्वस्थ खान-पान की आदतों को बढ़ावा देना—जैविक कृषि अक्सर टिकाऊ और सेहत का ध्यान रखने वाले खाद्य उत्पादन के तरीकों से जुड़ी होती है। यह लोगों को ताज़े और प्राकृतिक खाद्य पदार्थों को प्राथमिकता देने और बहुत ज़्यादा प्रोसेस किए गए या औद्योगिक रूप से बने खाद्य पदार्थों पर निर्भरता कम करने के लिए प्रोत्साहित करती है। जैविक कृषि को अपनाकर, लोग ऐसी खाद्य प्रणाली में योगदान दे सकते हैं जो सेहत, पर्यावरण की स्थिरता और नैतिक मूल्यों को प्राथमिकता देती है।

जैविक कृषि मानवीय स्वास्थ्य के लिए कई तरह से फायदेमंद है। यह हानिकारक रसायनों के संपर्क को कम करती है, पोषक तत्वों की गुणवत्ता बढ़ाती है, खाद्य सुरक्षा को बढ़ावा देती है और टिकाऊ व नैतिक खाद्य उत्पादन के तरीकों को समर्थन देती है। जैविक कृषि को अपनाकर लोग खान-पान से जुड़े ऐसे सही फैसले ले सकते हैं जिनसे उनकी अपनी सेहत और पर्यावरण की स्थिरता, दोनों को बढ़ावा मिले।

ग्रामीण आजीविका के लिए जैविक खेती का महत्व

ग्रामीण आजीविका के लिए जैविक खेती बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह आय के कई अवसर देती है, संसाधनों का सही इस्तेमाल बढ़ाती है और पर्यावरण की स्थिरता को बढ़ावा देती है। इस तरह यह ग्रामीण समुदायों की आर्थिक मजबूती और सामाजिक भलाई में योगदान देती है। जैविक तरीकों को अपनाकर, ग्रामीण किसानों को ऐसे खास बाजारों तक पहुंच मिलती है जो टिकाऊ तरीके से उगाए गए भोजन को महत्व देते हैं। इससे उन्हें अपने उत्पादों के लिए अच्छी कीमत मिलती है और खेती से होने वाला मुनाफा बढ़ता है। इसके अलावा, जैविक खेती में स्थानीय रूप से उपलब्ध संसाधनों (जैसे जैविक खाद और कीटों के नियंत्रण के प्राकृतिक तरीके) का इस्तेमाल होता है, जिससे बाहरी और महंगे इनपुट पर निर्भरता कम होती है। इससे उत्पादन लागत कम होती है और संसाधनों का बेहतर प्रबंधन होता है। साथ ही, जैविक खेती ग्रामीण इलाकों के प्राकृतिक स्वरूप, जैव विविधता और प्राकृतिक इकोसिस्टम को बचाने में मदद करती है, जिससे टिकाऊ आजीविका और सामुदायिक विकास के कामों के लिए अच्छा माहौल बनता है।

- 1- आय के विविध अवसर—जैविक खेती ग्रामीण समुदायों को आय के कई अवसर देती है क्योंकि इसमें जैविक उत्पादन के लिए उपयुक्त कई तरह की फसलें उगाई जाती हैं और पशुपालन किया जाता है। यह विविधता किसानों की किसी एक फसल या उत्पाद पर निर्भरता कम करने में मदद करती है और बाजार में उतार-चढ़ाव का सामना करने की क्षमता बढ़ाती है, जिससे ग्रामीण परिवारों की आय में स्थिरता आती है।
- 2- खास बाजारों तक पहुंच—जैविक खेती ऐसे खास बाजारों के दरवाजे खोलती है जो टिकाऊ तरीके से उगाए गए, उच्च गुणवत्ता वाले भोजन और कृषि उत्पादों को महत्व देते हैं। जैविक और पर्यावरण के प्रति जागरूक ग्राहकों को लक्षित करके, ग्रामीण किसान अपने जैविक उत्पादों के लिए अच्छी कीमत पा सकते हैं, जिससे खेती का मुनाफा बढ़ता है और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलता है।
- 3- संसाधनों का कुशल उपयोग—जैविक खेती आमतौर पर स्थानीय रूप से उपलब्ध संसाधनों जैसे जैविक खाद, फसल के अवशेष और कीटों के नियंत्रण के प्राकृतिक तरीकों पर निर्भर करती है। इससे किसानों की बाहरी और महंगी चीजों पर निर्भरता कम होती है, जिससे उत्पादन लागत कम होती है और संसाधनों का बेहतर इस्तेमाल होता है। इसके अलावा, जैविक खेती के तरीके जैसे खाद बनाना (कंपोस्टिंग) और कवर क्रॉपिंग मृदा की सेहत और उपजाऊपन को बेहतर बनाते हैं, जिससे खेती की जमीन की लंबे समय तक उत्पादकता बनी रहती है और आने वाली पीढ़ियों के लिए टिकाऊ आजीविका सुनिश्चित होती है।

- 4- पर्यावरण की देखभाल—जैविक खेती पर्यावरण के अनुकूल कृषि तरीकों को बढ़ावा देती है जो प्राकृतिक संसाधनों को बचाते हैं, जैव विविधता की रक्षा करते हैं और जलवायु परिवर्तन के असर को कम करते हैं। सिंथेटिक कीटनाशकों और उर्वरकों से बचकर, जैविक किसान पर्यावरण प्रदूषण को कम करते हैं और अपने इकोलॉजिकल फुटप्रिंट (पर्यावरण पर पड़ने वाले असर) को घटाते हैं। पर्यावरण की देखभाल के प्रति यह प्रतिबद्धता न केवल ग्रामीण इलाकों की प्राकृतिक सुंदरता को बचाती है, बल्कि स्वस्थ इकोसिस्टम को बनाए रखकर ग्रामीण आजीविका की समग्र स्थिरता को भी बढ़ाती है, जो खेती और ग्रामीण समुदायों का समर्थन करते हैं।
- 5- समुदाय की मज़बूती—जैविक कृषि सहयोग, ज्ञान साझा करने और स्थानीय आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देकर मज़बूत सामाजिक नेटवर्क और समुदाय की मज़बूती को बढ़ाती है। किसान सहकारी समितियों, समुदाय—समर्थित कृषि, वैदिक कार्यक्रमों और किसान बाजारों के जरिए, ग्रामीण समुदाय उत्पादकों और उपभोक्ताओं के बीच संबंध मज़बूत कर सकते हैं, सांस्कृतिक परंपराओं को बढ़ावा दे सकते हैं और समुदाय के प्रति गर्व और पहचान की भावना पैदा कर सकते हैं। इसके अलावा, जैविक कृषि किसानों के बीच एक-दूसरे को सिखाने और ज्ञान के आदान-प्रदान को प्रोत्साहित करती है, जिससे ग्रामीण निवासियों को कौशल विकसित करने, टिकाऊ खेती के तरीकों को अपनाने और चुनौतियों का मिलकर सामना करने में मदद मिलती है।
- 6- रोज़गार सृजन और ग्रामीण विकास—जैविक कृषि कृषि मूल्य शृंखला (टंसनम बैपद) में रोज़गार के अवसर पैदा करती है, जिसमें खेती, प्रोसेसिंग, मार्केटिंग और वितरण शामिल हैं। छोटे पैमाने के किसानों और स्थानीय खाद्य उद्यमों का समर्थन करके, जैविक कृषि ग्रामीण विकास, गरीबी उन्मूलन और ग्रामीण अर्थव्यवस्थाओं को पुनर्जीवित करने में योगदान देती है। साथ ही, जैविक कृषि उन पर्यटकों और आगंतुकों को आकर्षित करती है जो ग्रामीण जीवन और टिकाऊ खेती का प्रत्यक्ष अनुभव करना चाहते हैं, जिससे आर्थिक विकास को और बढ़ावा मिलता है और ग्रामीण पर्यटन की पहल को प्रोत्साहन मिलता है।

जैविक कृषि ग्रामीण आजीविका के लिए बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह आय के विविध अवसर, खास बाजारों तक पहुँच, संसाधनों का कुशल उपयोग, पर्यावरण की देखभाल, समुदाय की मज़बूती और ग्रामीण विकास प्रदान करती है। जैविक कृषि को अपनाकर, ग्रामीण समुदाय जीवंत और टिकाऊ अर्थव्यवस्थाएँ बना सकते हैं जिनसे लोगों और ग्रह दोनों को लाभ होता है।

जैविक कृषि के लाभ और फ़ायदे

1. जैविक कृषि के तरीके मृदा की उर्वरता, संरचना और जैव विविधता को बढ़ावा देते हैं, जिससे मृदा अधिक स्वस्थ बनती है और कटाव व क्षरण का बेहतर ढंग से सामना कर पाती है।
2. जैविक कृषि में कृत्रिम कीटनाशकों, खरपतवार नाशकों और उर्वरकों का इस्तेमाल नहीं किया जाता है, जिसके परिणामस्वरूप भोजन में रासायनिक अवशेषों का स्तर कम होता है और किसानों, उपभोक्ताओं व पर्यावरण का रसायनों से संपर्क कम होता है।
3. जैविक कृषि विविध पारिस्थितिक तंत्रों का समर्थन करती है, प्राकृतिक आवासों को संरक्षित करती है और परागणकों व लाभकारी जीवों के स्वास्थ्य को बढ़ावा देती है, जिससे जैव विविधता संरक्षण में योगदान मिलता है।
4. जैविक कृषि के तरीके मृदा में कार्बन को जमा करते हैं, ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करते हैं और जलवायु परिवर्तन के प्रति लचीलापन बढ़ाते हैं, जिससे यह जलवायु प्रभावों को कम करने की एक प्रमुख रणनीति बन जाती है।

5. ऑर्गेनिक उत्पादों में अक्सर ऑक्सीकरण रोधी, विटामिन और खनिजों जैसे लाभकारी पोषक तत्व अधिक मात्रा में होते हैं, जिससे पोषण की गुणवत्ता में सुधार होता है और उपभोक्ताओं को संभावित रूप से अधिक स्वास्थ्य लाभ मिलते हैं।
6. जैविक कृषि ऐसे खास बाजारों तक पहुँच प्रदान करती है जो टिकाऊ तरीके से उत्पादित भोजन को महत्व देते हैं, जिससे किसान अपने उत्पादों के लिए अच्छी कीमत पा सकते हैं और खेती से होने वाले मुनाफ़े को बढ़ा सकते हैं।
7. जैविक कृषि किसानों को आय के विविध अवसर प्रदान करती है, जिससे किसी एक फसल पर निर्भरता कम होती है और ग्रामीण समुदायों के लिए आय में स्थिरता आती है।
8. जैविक कृषि से पर्यावरण प्रदूषण कम होता है, प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण होता है, और इकोसिस्टम व वन्यजीवों के आवास की रक्षा होती है, जिससे कुल मिलाकर पर्यावरण की स्थिरता को बढ़ावा मिलता है।
9. ऑर्गेनिक पशुपालन में जानवरों की भलाई को प्राथमिकता दी जाती है; उन्हें खुली जगह, प्राकृतिक आहार और रहने के लिए अच्छी स्थितियाँ दी जाती हैं, जिससे फ़ार्म के जानवरों की सेहत बनी रहती है और उनका तनाव व तकलीफ़ कम होती है।
10. जैविक कृषि कृषि के प्रति एक समग्र दृष्टिकोण अपनाती है जिसमें पर्यावरण की देखभाल, इंसानी सेहत, आर्थिक व्यवहार्यता और सामाजिक भलाई को प्राथमिकता दी जाती है, जिससे यह खाद्य उत्पादन के लिए एक मज़बूत और टिकाऊ मॉडल बन जाता है।

जैविक कृषि की चुनौतियाँ

1. उत्पादन लागत की अधिकता—जैविक कृषि में अक्सर अधिक मेहनत वाले काम, जैविक प्रमाणिकरण और महंगे जैविक इनपुट की ज़रूरत होती है, जिससे पारंपरिक खेती की तुलना में उत्पादन लागत बढ़ जाती है।
2. संसाधनों तक सीमित पहुँच—किसानों को ऑर्गेनिक बीज, खाद और कीट नियंत्रण के तरीकों को पाने में चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है, खासकर उन इलाकों में जहाँ ऑर्गेनिक इनपुट कम उपलब्ध हैं या महंगे हैं।
3. कीट और बीमारी का प्रबंधन—पारंपरिक किसानों की तुलना में ऑर्गेनिक किसानों के पास कीट और बीमारी को नियंत्रित करने के सीमित विकल्प होते हैं, जिससे पैदावार में कमी और फसल को नुकसान हो सकता है।
4. बदलाव का दौर—पारंपरिक खेती से ऑर्गेनिक खेती में बदलने के दौरान एक बदलाव का दौर आता है, जिसमें किसानों को ऑर्गेनिक मानकों का पालन करना पड़ता है, लेकिन उन्हें सर्टिफाइड ऑर्गेनिक उत्पादों के लिए ज्यादा कीमत नहीं मिलती, जिससे आर्थिक चुनौतियाँ पैदा होती हैं।
5. खरपतवार नियंत्रण—ऑर्गेनिक किसानों को सिंथेटिक हर्बिसाइड्स के बिना खरपतवार को नियंत्रित करने में मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। वे अक्सर हाथ से काम करने, मशीनी खेती और कवर क्रॉपिंग पर निर्भर रहते हैं, जिसमें ज्यादा समय और मेहनत लगती है।
6. पैदावार में उतार-चढ़ाव—ऑर्गेनिक खेती के तरीकों से शुरुआत में पैदावार कम हो सकती है क्योंकि मिट्टी में बदलाव हो रहा होता है, जिससे फसल की पैदावार में उतार-चढ़ाव आता है और किसानों की आय में अस्थिरता हो सकती है।
7. बाज़ार तक पहुँच और कीमत—ऑर्गेनिक किसानों को ऐसे बाजारों तक पहुँचने में चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है जो ऑर्गेनिक उत्पादों को महत्व देते हैं और ज्यादा कीमत देते हैं, खासकर उन इलाकों में जहाँ ग्राहकों की मांग कम है या पारंपरिक उत्पादों से प्रतिस्पर्धा है।
8. सर्टिफिकेशन और नियमों का पालन—ऑर्गेनिक सर्टिफिकेशन पाने और उसे बनाए रखने के लिए कड़े मानकों और नियमों का पालन करना ज़रूरी होता है, जो किसानों के लिए समय लेने वाला, महंगा और कागज़ी कार्रवाई वाला काम हो सकता है।

9. जानकारी और ट्रेनिंग—ऑर्गेनिक खेती के लिए मिट्टी के प्रबंधन, फसल चक्र, कीट नियंत्रण और ऑर्गेनिक सर्टिफिकेशन में खास जानकारी और कौशल की ज़रूरत होती है, इसलिए किसानों के लिए लगातार शिक्षा और ट्रेनिंग ज़रूरी है।
10. ग्राहकों की सोच और जानकारी—कुछ ग्राहक ऑर्गेनिक खेती के फायदों से अनजान हो सकते हैं या इसकी प्रभावशीलता पर शक कर सकते हैं, जिससे ऑर्गेनिक उत्पादों की मार्केटिंग करने और ऑर्गेनिक खेती के तरीकों में ग्राहकों का भरोसा बनाने में चुनौतियाँ आती हैं।

संदर्भ

1. Agriculture Research Data Book 2019, ICAR—Indian Agriculture Statistics Research Institute, Pusa, New Delhi, available at www.iasri.res.in
2. Annual report 2018–19, Ministry of Agriculture and Farmers Welfare, Government of India.
3. Report of the Committee on Doubling Farmers' Income—Volume V: Sustainability Concerns in Agriculture, Ministry of Agriculture and Farmers Welfare, November 2017, available at <http://farmer.gov.in/imagedefault/DFI/DFI%20Volume%205.pdf>
4. HLPE. 2019. Agroecological and other innovative approaches for sustainable agriculture and food systems that enhance food security and nutrition. A report by the High Level Panel of Experts on Food Security and Nutrition of the Committee on World Food Security, Rome.